



गुरुग्राम (उद्घाटन सत्र) - ओम शांति रिट्रीट सेंटर में महिला प्रभाग द्वारा आयोजित महिला सम्मेलन का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए (बाएँ से दाएँ) डॉ. अदिति सिंघल- मोटिवेशनल स्पीकर, बहन दिव्या मिगलानी- बोर्ड मेम्बर- फोर व्हील रेसिंग कमीशन, डॉ. आर.एच. लता- संस्थापक- इंडियन योगिनी एसोसिएशन, ब्र.कु. डॉ. सविता दीदी- राष्ट्रीय संयोजिका- महिला प्रभाग, ब्र.कु. चक्रधारी दीदी- अध्यक्षा- महिला प्रभाग, ब्र.कु. आशा दीदी - निर्देशिका- ओम शांति रिट्रीट सेंटर एवं मेम्बर ऑफ मैनेजमेंट कमेटी- ब्रह्माकुमारीज़, ब्र.कु. शक्ति दीदी- वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका- राजौरी गार्डन- दिल्ली, बहन पूनम मल्होत्रा- समाज सेविका एवं योग-सहयोग केंद्र की प्रमुख, बहन किरण श्रीवास्तव - अध्यक्षा - अखिल भारतीय महिला सम्मेलन (AIWC) - गाज़ियाबाद एवं अन्य ।



दिल्ली - अखिल भारतीय मानवाधिकार, स्वतंत्रता एवं सामाजिक न्याय परिषद द्वारा मानव अधिकार दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में अपनी अनवरत सेवाओं के लिए ब्र.कु. डॉ. सविता दीदी - राष्ट्रीय संयोजिका- महिला प्रभाग को **Global Women of Courage and Empowerment Award** से सम्मानित करते हुए परिषद के संरक्षक एवं आयोजक ।



इसी कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित पैनल सत्र में भाग लेते हुए ब्र.कु. डॉ. सविता दीदी एवं अन्य ।



नये वर्ष की शुभकामनाएँ

नया वर्ष जीवन में नई ऊर्जा, नई आशा और नए उत्साह का संदेश लेकर आता है। यह अवसर है कि हम अपने विचारों को सकारात्मक दिशा दें और जीवन में आने वाले परिवर्तनों को सहज रूप से स्वीकार करें। आत्मिक मूल्यों और परमात्मा के ज्ञान के आधार पर हम बीते हुए अनुभवों से सीख लेते हुए, व्यर्थ चिंताओं को छोड़कर, नई सोच और नए दृष्टिकोण के साथ आगे बढ़ सकते हैं। इस नए वर्ष में स्वयं के प्रति, परिवार के प्रति और समाज के प्रति श्रेष्ठ भावनाओं को अपनाते हुए, संतुलन, शांति और सफलता की ओर निरंतर बढ़ते रहें। इन्हीं शुभ भावनाओं के साथ आप सभी को परिवार सहित नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ।





गुरुग्राम (स्वागत सत्र) – राष्ट्रीय महिला सम्मेलन के स्वागत सत्र में अपना उद्बोधन देते हुए ब्र.कु. डॉ. सविता दीदी – राष्ट्रीय संयोजिका, महिला प्रभाग, मंच पर उपस्थित – (बाएँ से दाएँ) ब्र.कु. दिव्या – फैकल्टी – ओम शांति रिट्रीट सेंटर, ब्र.कु. शक्ति दीदी – वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका – राजौरी गार्डन – दिल्ली, बहन डॉ. गीता – ऑल इंडिया वूमेन लॉयर्स एसोसिएशन, ब्र.कु. चक्रधारी दीदी – अध्यक्षा – महिला प्रभाग – ब्रह्माकुमारीज़, ब्र.कु. पुष्पा दीदी – अध्यक्षा – ज्यूरिस्ट प्रभाग – ब्रह्माकुमारीज़, बहन किरण श्रीवास्तव – अध्यक्षा – ऑल इंडिया वूमेन कॉन्फ्रेंस (AIWC) – गाजियाबाद, बहन गौरी सरिन – संस्थापक – मेकिंग मॉडल – गुरुग्राम, भूमिज्जा और लिविंग विदाउट मेडिसिन।

नारी सशक्तिकरण के लिए सकारात्मक परिवर्तन

सशक्त बनना केवल कोई गुण नहीं, बल्कि एक सतत प्रक्रिया है। जब हम अपने जीवन और समाज पर दृष्टि डालते हैं, तो पाते हैं कि कुछ लोग अपने व्यक्तित्व और कार्यों में अत्यंत सशक्त हैं। इससे प्रेरणा मिलती है, लेकिन साथ ही यह प्रश्न भी उत्पन्न होता है – हम भी उनके समान सशक्त कैसे बन सकते हैं? कैसे कुछ ही दिनों में हम वह ऊर्जा और क्षमता विकसित कर सकते हैं, जो न केवल हमारे स्वयं के व्यक्तित्व को सशक्त बनाए, बल्कि हमारे परिवार और आस-पास के समाज को भी मजबूती और संतुलन प्रदान करे? महिलाओं की भूमिका परिवार की केंद्रीय धुरी के समान होती है उनका प्रयास हमेशा यही रहता है कि वे सभी को मार्गदर्शन, प्रेम और सहयोग प्रदान करें, भले ही अपने स्वयं के पोषण और देखभाल को पीछे छोड़ना पड़े। अक्सर कहा जाता है कि परिवर्तन अपने आप ही आता है। समय के साथ जीवन में, हमारी सोच, दृष्टिकोण और कार्य करने के तरीके स्वाभाविक रूप से बदलते हैं। हालांकि, यह परिवर्तन दो प्रकार का होता है। पहला, वह स्वाभाविक बदलाव जो समय और परिस्थितियों के दबाव में आता है; और दूसरा, वह सक्रिय और सचेत परिवर्तन, जिसे हम अपने जीवन में अपनाकर न केवल स्वयं को बल्कि अपने परिवार और समाज को भी सकारात्मक दिशा में बदल सकते हैं।

समय को बदलने की शक्ति

अक्सर लोग कहते हैं, "क्या करें, ज़माना ही ऐसा है," और उसी के अनुसार खुद को बदल लेते हैं। उदाहरण के लिए, अगर बच्चे नहीं सुनते तो हम अनायास ही उनकी आदतों और व्यवहार के अनुसार ढल जाते हैं। हम अपने भीतर सक्रिय परिवर्तन लाकर न केवल स्वयं को, बल्कि समय और परिस्थितियों को भी प्रभावित कर सकते

हैं। परिस्थितियाँ चाहे कैसी भी हों – अच्छी या चुनौतीपूर्ण – हम अपने अनुभवों और अपने भीतर के बदलावों से उन्हें बेहतर बना सकते हैं। हालांकि, सकारात्मक बदलाव रातों-रात नहीं आता। इसकी शुरुआत स्वयं की देखभाल यानी स्वयं की देखभाल से होती है। हमें खुद को समय देना है, खुद को भरना है। हम अपने जीवन और परिवार दोनों में सशक्त परिवर्तन ला सकते हैं। हालांकि, देने का संस्कार होने के कारण अक्सर यह भ्रम पैदा हो जाता है कि अपने लिए समय निकालना या स्वयं की प्राथमिकताओं को ध्यान में रखना स्वार्थी होना है। किन्तु वास्तविकता यह है कि कुछ मामलों में स्वयं पर ध्यान देना और अपने भीतर ऊर्जा संचित करना न केवल आवश्यक है, बल्कि यह हमें और अधिक प्रभावी और सशक्त बनाने वाला कदम है। सही दृष्टिकोण अपनाने पर हम समझ सकते हैं कि स्वयं की देखभाल और संतुलन बनाना किसी भी व्यक्ति के जीवन और परिवार के लिए लाभकारी होता है।

यथार्थ को समझना

जैसे हम कहते हैं, "सूर्य पूर्व से उगता है" पर वास्तविकता यह है कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है। फिर भी हम रोज़ उसे उगते हुए देखना पसंद करते हैं। इसी प्रकार, जीवन में भी कई चीज़ें वैसी नहीं होतीं जैसी पहली नजर में प्रतीत होती हैं। आध्यात्मिक दृष्टि हमें उनकी असली वास्तविकता को समझने और उनके पीछे की गहराई देखने की क्षमता प्रदान करती है।

एक महिला परिवार का वह केंद्र है, जिसे सभी सदस्यों को संतुलन और ऊर्जा प्रदान करनी होती है। लेकिन यह केंद्र भी तब तक पूर्ण रूप से फलदायी नहीं हो सकता जब तक वह स्वयं से भरा और सशक्त न हो। यदि महिला स्वयं शारीरिक और

मानसिक रूप से कमजोर हो, तो उसका परिवार भी संतुलित नहीं रह सकता। इसलिए यह आवश्यक है कि स्वयं का ध्यान रखा जाए, ताकि परिवार और समाज में सकारात्मक योगदान दिया जा सके। इसी लिए कहा जाता है "If you don't respect your body, your body will stop respecting you."

शरीर और मन का स्वास्थ्य

हम अक्सर अपना अधिकांश समय बाहरी सजावट और देखभाल में व्यतीत करते हैं, लेकिन क्या हम अपने आंतरिक स्वास्थ्य और मन के स्वास्थ्य को उतना महत्व देते हैं?

(मुझे इस बात का एहसास तब हुआ जब मैं 2009 में पहली बार इस परिसर में आई थी। वहां मुझे कहा गया कि मोबाइल साइलेंट रखें और जो भी बात करनी हो, वह सुबह करें। जब मैंने ऐसा किया, तो मुझे महसूस हुआ कि मैं पहली बार खुद से मिल रही हूँ। घर और पेशेवर जीवन की व्यस्तताओं में हम अपनी वास्तविक शक्ति और संभावनाओं को भूल जाते हैं। कुछ ही दिनों में मैंने खुद के लिए समय निकालना शुरू किया। मैंने महसूस किया कि मेरी छिपी शक्तियाँ और संभावनाएँ कितनी हैं, जिन्हें मैं अब तक जान नहीं पाई थी। यही अनुभव मुझे निरंतर आत्म-सशक्तिकरण की ओर ले गया।) यानि सही दृष्टिकोण अपनाकर स्वयं के लिए समय निकालना और अपने शरीर और मन को स्वस्थ रखना ही आत्म-सशक्तिकरण की नींव है।

स्वयं के लिए समय निकालकर जब हम अपने भीतर छिपी शक्तियों और संभावनाओं को पहचानते हैं, तो न केवल हमारी व्यक्तिगत ऊर्जा में वृद्धि होती है, बल्कि हमारा परिवार और समाज भी उससे लाभान्वित होता है। यही अनुभव व्यक्ति को निरंतर आत्म-सशक्तिकरण की ओर ले जाता है और जीवन में स्थायी परिवर्तन लाने की प्रेरणा प्रदान करता है।

संबंधों में सकारात्मक बदलाव

आजकल हमारा समय कहाँ जा रहा है, यह हम जानते हैं, लेकिन फिर भी हम इसे नियंत्रित नहीं कर पाते। हर माँ इस बात से परेशान है कि उनके बच्चों का मोबाइल कभी नहीं छूटता। पहले हम माता-पिता के इशारे से सीखते थे और समझते थे कि क्या करना है और क्या नहीं करना है। लेकिन आज के बच्चे इशारे से सुनते नहीं, क्योंकि हमारे साथ उनकी नयनमुलाकात बहुत कम होती है। टेक्नोलॉजी ने उनकी नैतिकता पर असर डाला है।

"यदि हमारे विचार सकारात्मक और दिशा-संयमित हों, तभी हम और हमारे बच्चे सशक्त बन सकते हैं।" अक्सर हम बच्चों के पास जाते हैं, तो वे फोन में लगे रहते हैं, और जब बच्चे हमारे पास आते हैं, तो हम मोबाइल में। इससे बच्चों के मन में यह अनुभव बनता है कि क्या हम सचमुच उनकी बात सुन रहे हैं या नहीं।

स्वयं पर ध्यान केंद्रित करें

हम छोटी-छोटी चीज़ों से सशक्त बन सकते हैं। एक छोटा सा बदलाव यह है कि जब आप किसी से बात



गुरुग्राम (पैनल सत्र)- राष्ट्रीय महिला सम्मेलन के पैनल सत्र में भाग लेते हुए प्रो. संजना विज - एमिटी अकादमिक स्टाफ कॉलेज, डिप्टी डीन - छात्र कल्याण तथा अध्यक्ष - वीमेन सेल - एमिटी विश्वविद्यालय, डॉ. उषा किरण - प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, कार्डियक एनेस्थीसिया, कार्डियो-न्यूरो सेंटर, एम्स - नई दिल्ली, ब्र.कु. रजनी दीदी - निदेशक - ब्रह्माकुमारीज - जापान एवं फिलीपींस, डॉ. नैन्सी जुनेजा - वैश्विक अध्यक्ष, MENTORx वूमेन एवं TEDx वक्ता, डॉ. अदिति सिंघल - प्रेरक वक्ता, ब्र.कु. विधात्री - फैकल्टी - ओम शांति रिट्रीट सेंटर।



गुरुग्राम (समापन सत्र)- राष्ट्रीय महिला सम्मेलन के समापन सत्र में अपना उद्बोधन देते हुए फैशन डिजाइनर मिसेज इंटरनेशनल 2025 बहन सलोनी मल्होत्रा, मंच पर उपस्थित - (बाएँ से दाएँ) लॉरेंस रोड स्थित सेवाकेंद्र प्रभारी ब्र.कु. लक्ष्मी, श्रीराम सोसाइटी ऑफ रियल एजुकेशन की निदेशक एवं अध्यक्ष बहन डॉ. अमृता ज्योति, हरियाणा राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष बहन रेणु भाटिया, संस्थान के पालम विहार सेवाकेंद्र की प्रभारी ब्र.कु. उर्मिल, बहन डॉ. मंजु गुप्ता - मोटिवेशनल स्पीकर, ब्र.कु. हुसैन - राजयोग शिक्षिका, ओ.आर.सी.।



गुरुग्राम - ध्यानपूर्वक सुनते हुए अतिथिगण।

करें, तो आँखों में आँखें मिलाकर बात करें। काम छोड़कर और पूरा ध्यान देकर संवाद करें। घर के बुजुर्गों को बस पांच मिनट का ध्यान चाहिए। यदि हम उन्हें यह समय दें, तो संबंध मजबूत और सुंदर बनेंगे। ये छोटे-छोटे परिवर्तन संयम और राजयोग के अभ्यास से संभव होते हैं। स्वयं पर ध्यान केंद्रित करके, हम अपने जीवन में सशक्तिकरण महसूस कर सकते हैं। केवल अच्छी बातें सुनना पर्याप्त नहीं है; यदि हम एक कदम बढ़ाएँ, तो परमात्मा हजार कदम बढ़ाने के लिए हमेशा तत्पर है।

सकारात्मक परिवर्तन की दिशा

सशक्तिकरण का मार्ग छोटे प्रयासों और लगातार ध्यान से बनता है। अपने विचारों की दिशा को सही करना, समय को सार्थक बनाना और हर रिश्ते में सच्चा ध्यान देना - यही हमारे जीवन को बदलने की कुंजी है। जब हम खुद पर और अपने परिवार पर सकारात्मक ध्यान देते हैं, तो हमारे चारों ओर की दुनिया भी बदलने लगती है।

सशक्तिकरण केवल व्यक्तिगत विकास नहीं है; यह हमारे चारों ओर के वातावरण और संबंधों में भी सकारात्मक बदलाव लाता है। यदि हम अपने भीतर बदलाव लाएँ और उसका असर अपने आस-पास महसूस करें, तो समय, परिस्थिति और रिश्तों - सबमें परिवर्तन संभव है। यही सकारात्मक परिवर्तन और सशक्त जीवन का वास्तविक मार्ग है।

“छोटा कदम हम लें, लेकिन परमात्मा हमेशा हमारे साथ है। यही सशक्तिकरण का मार्ग है।”

रिपोर्ट

महिला प्रभाग मीटिंग

16-19 नवम्बर, 2025 - नागपुर

नागपुर के जामठा स्थित विश्व शांति सरोवर परिसर में दिनांक 17 से 19 नवम्बर 2025 को महिला प्रभाग की विशेष मीटिंग, ट्रेनिंग और कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में महिला प्रभाग की अध्यक्षा ब्र.कु. चक्रधारी दीदी एवं महिला प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु. डॉ. सविता दीदी उपस्थित रहे।

17 एवं 18 नवम्बर को महिला प्रभाग की विशेष मीटिंग तथा ट्रेनिंग रही जिसमें भारत के अलग-अलग प्रांतों से - राजस्थान, आंध्रप्रदेश, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र और दिल्ली के प्रतिभागियों ने भाग लिया। मीटिंग में अपनी शुभ प्रेरणाएं देते हुए महिला प्रभाग की अध्यक्षा ब्र.कु. चक्रधारी दीदी ने कहा महिलाओं के हृदय में मानव मात्र की सेवाओं के लिए प्यार, रहम और सहयोग की भावना की आवश्यकता है। माताओं की सेवा के लिए हम ब्रह्माकुमारी बहनें बहुत सुंदर रोल अदा कर सकती हैं। उन्होंने महिलाओं के बाहरी सशक्तिकरण के साथ नैतिक और आध्यात्मिक सशक्तिकरण पर भी जोर दिया। जिससे महिलाओं के जीवन में नैतिक और आध्यात्मिक मूल्य आयें।

तत्पश्चात् इस मीटिंग में महिला प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु. डॉ. सविता दीदी ने अब तक की सेवाओं के बारे में विस्तृत जानकारी दी और भविष्य में किये जाने वाले कार्यक्रमों पर भी चर्चा की गई, जिनमें निम्नलिखित बातें उभरकर आईं

- महिलाओं की सेवा को व्यापक, संगठित और प्रभावशाली बनाने के लिए अनेक सुझाव सामने आए। वूमेन्स डे जैसे अवसरों पर बड़े स्तर के कार्यक्रम आयोजित करने की बात हुई, जिनमें समाज की माताओं, महिला संगठनों और VIP लेडीज़ को जोड़कर उन्नत सेवा की जा सके। इसके साथ ही सामाजिक, सांस्कृतिक और सरकारी महिला संगठनों में जुड़कर उनकी जरूरतों एवं रुचियों को समझते हुए सेवा का मार्ग बनाने पर जोर दिया गया। सीधा ज्ञान देने के बजाय पहले संबंध और विश्वास बनाना ज़रूरी बताया गया, ताकि आध्यात्मिक बातें वे सहजता से स्वीकार करें।



नागपुर - प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की ओर से जामठा स्थित विश्व शांति सरोवर में “सामाजिक एकता एवं विश्वास में महिलाओं की भूमिका” विषय पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित कर ईश्वरीय स्मृति में खड़े (बाएं से दाएं) बहन कविता सिंघानिया, नागपुर सेवाकेंद्र की संचालिका ब्र.कु. रजनी दीदी, वी.एन. आई.टी. की प्रो. बहन माधुरी चौधरी, बहन परिणीता फुके - कॉर्पोरेटर - नागपुर नगर निगम, ब्र.कु. चक्रधारी दीदी - अध्यक्षा, महिला प्रभाग, भक्ति वृंद की संस्थापक बहन सविता अजय संचेती, ब्र.कु. डॉ. सविता दीदी - राष्ट्रीय संयोजिका, महिला प्रभाग, ब्र.कु. माला दीदी - जोनल कोऑर्डिनेटर, मुंबई, ब्र.कु. मनीषा दीदी - उपसंचालिका, नागपुर सेवाकेंद्र, ब्र.कु. शीला दीदी - वाशी, ब्र.कु. शक्ति दीदी - निर्देशिका - राजौरी गार्डन सेंटर्स, दिल्ली एवं ब्र.कु. लता बहन ।

- ज्ञान और आध्यात्मिक भावना को बनाए रखते हुए परिवार और समाज की परंपराओं का सम्मान करने तथा परिस्थितियों के अनुसार भक्ति के बाहरी रूपों में सहभागी होने को भी संतुलन का साधन बताया गया। लोगों की भावनाओं का मान रखकर अपनापन बनाना आगे की सेवाओं के लिए मजबूत आधार बनता है। कार्यक्रमों को आकर्षक बनाने के लिए नई गतिविधियाँ, प्रतियोगिताएँ, प्रतिष्ठित जज, कैडल लाइटिंग जैसे विचार शामिल करने की सलाह दी गई। पैरेंटिंग कार्यक्रमों में माता-पिता को बच्चों के साथ बुलाया जाये।

- दूसरों को प्रेरित करने के लिए पहले उनके जैसा बनकर जुड़ना और अपने जीवन व बच्चों में आए सकारात्मक बदलावों को उदाहरण बनाकर प्रस्तुत करना सबसे प्रभावशाली तरीका है। सेंटर पर सेवा तभी सुचारु होती है जब बहनें आपस में सम्मान, प्रेम और बिना ईर्ष्या के मिलकर काम करें-अच्छा योग, अच्छा व्यवहार और कम बोलना इसकी नींव है। घर-परिवार के लोगों को जन्मदिन, गेट-टुगेदर जैसे अवसरों पर सेंटर/मधुबन लाने से उनका विरोध कम होता है और सहयोग बढ़ता है।

- विभिन्न सामाजिक समूह - रोटरी, लायंस, स्थानीय महिला मंडल, सिंधी, अग्रवाल, महेश्वरी समाज, महिला मोर्चा, आंगनवाड़ी एवं स्वयं सहायता समूह - के माध्यम से सेवा का विस्तार स्वाभाविक रूप से किया जा सकता है। त्योहारों तथा सार्वजनिक आयोजनों पर महिलाएं बड़ी संख्या में एकत्र होती हैं; ऐसे अवसरों पर मूल्य-आधारित साहित्य एवं संदेश देकर प्रभावी सेवा की जा सकती है, साथ ही मासिक कार्यक्रम एवं व्हाट्सएप समूहों

के माध्यम से निरंतर संपर्क बनाए रखने की सलाह दी गई।

- फिजिकल सेल्फ-डिफेंस और स्पिरिचुअल इनर-एंपावरमेंट पर चर्चा करते हुए बताया गया कि महिलाओं को बाहरी और आंतरिक दोनों रूपों में सशक्त बनाना आवश्यक है। सिंगल, विधवा या तलाकशुदा महिलाओं के लिए एक विशेष संगठन/एनजीओ बनाकर उन्हें मानसिक, सामाजिक और आध्यात्मिक समर्थन देने पर भी विचार किया गया।

- हर रिट्रीट सेंटर में साल में एक बार महिलाओं के लिए एक सम्मेलन रखने की सलाह दी गई, ताकि महिलाएं परिवार, रिश्ते, स्वास्थ्य, व्यवहार और बच्चों की परवरिश से जुड़ी उपयोगी बातें सीख सकें। छोटे समूहों में महिलाओं को बुलाकर फैमिली वैल्यूस का सेशन लेना भी अत्यंत लाभकारी बताया गया, जिसके सेशन “महिला बने महान” पुस्तक में आसानी से उपलब्ध है।

- साथ ही महिलाओं के लिए ऑनलाइन फिटनेस सेशन, डिप्रेशन सहायता, गर्भ संस्कार ट्रेनिंग और रिटायर्ड महिलाओं के लिए आध्यात्मिक कार्यक्रम जैसी सेवाओं का विस्तार करने की आवश्यकता पर भी जोर दिया गया।

- छोटे ग्रुप में अनुभव-आधारित चर्चा उपयोगी बताई गई, लेकिन हर ग्रुप में एक टीचर बहन का होना आवश्यक है ताकि चर्चा विषय से न भटके। ये वर्कशॉप केवल सेंटर पर हों और 1-2 लोग घर जाकर चर्चा न करें, ताकि बातें निजी न बनें और उद्देश्यपूर्ण रहें। इससे सभी को प्रैक्टिकल समाधान, स्पष्टता और पारिवारिक व आध्यात्मिक जीवन में संतुलन मिलता है।

- अंत में, महिलाओं के स्वास्थ्य - जैसे मेनोपॉज, एनीमिया, विटामिन की कमी - पर विशेष ध्यान देने और सेंटर पर लेडी डॉक्टर या गाइनी विशेषज्ञ के माध्यम से समय-समय पर हेल्थ क्लास/कैप रखने का सुझाव दिया गया, ताकि माताओं को सही अवेयरनेस और न्यूट्रिशन की जानकारी मिल सके। Peace of Mind Channel पर “The New Women” show शनिवार, रविवार को प्रसारित होता है - जिसमें महिलाओं के स्वास्थ्य संबंधी, परिवार एवं संबंधों को लेकर बातचीत की गई है - ये Youtube (Link - <https://www.youtube.com/playlist?list=PLIHGGvsfey9YNvU93ua1NoLOQtPmsZ3W>) पर भी उपलब्ध है। इसके साथ महिला सशक्तिकरण और पारिवारिक मूल्यों पर ट्रेनिंग दी गई।

19 नवम्बर को विश्व शांति सरोवर में ‘सामाजिक एकता एवं विश्वास में महिलाओं की भूमिका’ विषय पर एक विशेष महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें करीब 1200 महिलाओं ने भाग लिया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से महिला प्रभाग की अध्यक्षा ब्र.कु. चक्रधारी दीदी, महिला प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु. डॉ. सविता दीदी, नागपुर सेवाकेंद्र की संचालिका ब्र.कु. रजनी दीदी, वी.एन. आई.टी. की प्रो. बहन माधुरी चौधरी, बहन परिणीता फुके - कॉर्पोरेटर - नागपुर नगर निगम, भक्ति वृंद की संस्थापक बहन सविता अजय संचेती उपस्थित रहे।

सम्पादिका : ब्र.कु. चक्रधारी, शक्तिनगर, दिल्ली
सह-सम्पादिका : ब्र.कु.डॉ. सविता, शान्तिवन
सम्पादकीय पत्र-व्यवहार : डॉ. सविता शान्तिवन, (आबू रोड)
प्रकाशक व मुद्रक ब्र.कु. आत्मप्रकाश,
ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, शान्तिवन (आबू रोड) - 307510

राष्ट्रीय कार्यालय : 19/17, शक्तिनगर, दिल्ली-110007

प्रति,